1

राज्य की उत्पति : विविध सिध्दान्त
(origin of the state : Different theories)

मानव - सभ्यता के विकास का इतिहास राज्य के अस्तित्व के साथ जुड़ा है। परंतु मनुष्य शुरु से सभ्य नहीं था। अतः यह मान सकते है कि शुरु -शुरु मे राज्य नहीं था। अतः यह राज्य की उत्पति कैसे हुई। इस बारे में कोई सर्वसम्मत सिध्दान्त नहीं है। विचारको ने कोरी कल्पना के आधार पर राज्य की उत्पति के सिध्दान्त प्रस्तुत किए है। हालांकि आज के युग में केवल उन्हीं बातों को स्वीकार किया जाता है। जिनके वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार प्रस्तुत किए जा सके। राज्य की उत्पति के अनेक सिध्दान्त राज्य की शक्ति के आधार, राज्य के उद्देश्य व्यक्ति के राजनीतिक दायित्व, इत्यादि की व्याख्या देने के ध्येय से प्रस्तुत किए गए है।

राज्य की दैवी उत्पति का सिध्दान्त
(Theory of divine origin of the State)

यह एक काल्पनिक सिध्दान्त है। देखा जाए तो यह राज्य की उत्पति को समझने में विशेष सहायता नहीं देता। इसका मुख्य ध्येय राज्य की शक्ति के दैवी आधार की पुष्टि करना है। जिसके लिए यह राज्य की दैवी उत्पति की कल्पना का प्रयोग कर लेता है।

यूरोपीय परंपरा में → राज्य की दैवी उत्पति का सिध्दान्त राजतंत्र (Monarchy) के युग में विकसित हुआ। इसका ध्येय यह सिद्ध करना था कि राजा के अधिकार दैवी अधिकार है।

सामाजिक अनुबंध की अवधारणा
(Notion of the Social contract

उदारवादी विचारक राज्य को एक ऐसी संस्था मानते है। जिसे सब मनुष्यों या उनके समूहों ने मिलकर अपने

1

अपने हित और लाभ के लिए बनाया है। यह विचार राज्य के यंत्रीय सिद्धान्त (Mechanistic theory of the State) के साथ निकट से जुड़ा है। राज्य के उत्पत्ति यंत्रीय सिद्धान्त का आविर्भाव सत्रहवीं शताब्दी के यूरोप में हुआ।

राज्य की उत्पत्ति का ऐतिहासिक सिद्धान्त (Historical theory of the origin of the State)

राज्य की उत्पत्ति का विकासात्मक (Evolutionary) या ऐतिहासिक सिद्धान्त राज्य को अन्य मानव संस्थाओं की तरह ऐतिहासिक विकास का परिणाम मानता है। इसके अनुसार राज्य न तो कोई दैवी संस्था है; न बल - प्रयोग का परिणाम है। न ऐसा साधन है। जिसे मनुष्यों ने सोच विचार कर और मिल - जुलकर एक साथ बना डाला हो। वास्तव में राज्य मनुष्य के सामाजिक जीवन के क्रमिक विकास का स्वाभाविक परिणाम है।

मनुष्य ने राज्य का आविष्कार नहीं किया। बल्कि, अपने - अपने जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए - धीरे - धीरे जो विविध संगठन बनाए, उन्हीं में से राज्य अपने आप विकसित हुआ।

जैसे मनुष्यों ने अपनी भाषा का आविष्कार नहीं किया, बल्कि आपस में बोलते - बोलते उन्होंने शुरू - शुरू में कुछ ऐसे शब्द और वाक्य निश्चित किए जिनका वे समान अर्थ लगाते थे। फिर उन्हें प्रयुक्त करते - करते उन्होंने अपनी - अपनी भाषाएँ विकसित कर ली। इसी तरह उन्होंने पहल - पहल सामाजिक संगठन के कुछ रूप अपनाए, फिर उनमें से राज्य का विकास हुआ।